ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol.-6* Issue-2* March- 2021
Innovation The Research Concept

मिलावट की समस्या

Adulteration Problem

Paper Submission: 03/03/2021, Date of Acceptance: 24/03/2021, Date of Publication: 25/03/2021

कविता चौहान
शोधार्थी
(एम.फिल., पी.एच–डी.),
हिन्दी,
यमुना नगर, हरियाणा, भारत

सारांश

वर्तमान समय में हमें मिलावट की समस्या का भी सामना करना पड़ रहा है। मनुष्य की तीन आधारभूत आवश्यकताओं में मिलावटीपन के कारण अनेक समस्याएं हमारे सामने हैं। रोटी, कपड़ा और मकान। दैनिक जीवन में उपयोग लाई जानी वाली वस्तुओं का शुद्ध रूप हमारे लिए एक स्वप्न के समान है। यदि हम आज मार्किट में जाते हें तो हर ग्राहक का एक ही प्रश्न होता है कि शुद्ध है, मिलावट तो नही है। क्या यह प्रश्न सुनते हुए शर्म नहीं आती होगी। मिलावट की समस्या इस कदर व्यापक बन गई है कि खाने–पीने की वस्तुओं की शुद्धता के विषय में हम लोगों के मन में अविश्वास और सन्देह की जड़ बहुत अन्दर तक जम गई हैं। आज शुद्ध रूप में कोई भी वस्तु शायद ही प्राप्त हो।

आज मिलावट से हमारे ग्रामीण इलाके भी नहीं बच पा रहे हैं। आज शहरों, गांवों में अपने–अपने तरीके से मिलावट करते हैं। अनाज, घी, तेल से बच्चों के लिए खाद्य पदार्थ जो तैयार किए जाते हैं उनमें भी मिलावट मिलती है। मिठाईयों और फल, सबिजयों में भी मिलावट की जाती है। जैसे तरबूज में लाल रंग का मीठा धोलकर इन्जैक्शन से अन्दर दवाई या रंग लाल रंग करने के लिए डाली जाती है।

बच्चों को जो दूध पिलाया जाता है। इसमें भी गंदा पानी, अरारोट, सपरेटा का पावडर, आदि मिलाया जाता है।

At the present time we are also facing the problem of adulteration. Many problems are faced due to adulteration among the three basic requirements of man. Bread, clothes and houses. The pure form of the objects used in daily life is like a dream for us.If we go to the market today, every customer has the same question. That is pure, it is not adulterated. Would you not be ashamed to hear this question? The problem of adulteration has become so pervasive that the root of mistrust and suspicion has deepened in the minds of people about the purity of our food items.Today hardly anything is received in pure form.

Today even our rural areas are not able to escape adulteration. Today cities and villages adulterate in their own way. Foods that are prepared for children with grains, ghee, oil are also adulterated. Sweets and fruits, vegetables are also adulterated. For example, in melon sweet red color is washed and injected to make the medicine or color red.Children who are fed milk. Dirty water, arrowroot, powder of sapretta, etc. are also added to it.

मुख्य शब्द :अरारोट, सपरेटा, इंजैक्शन, मार्किट, अपद्रव्यीकरण, अपमिश्रण, छुहारे, लीद, धासलेट, दूध–दहीं, कानून, खिलवाड़, फांसी, अधिनियम, कार्बाइड, रासायनिक, पेस्टिसाइड, भूसा, चूरा, बालू, रोडामाइन, खेसारी, फैविकोल

Arrowroot, Sapretta, Injection, Market, Defalcation, Adulteration, Dagger, Droppings, Damsels, Milk-In-Law, Law, Messing, Hanging, Act, Carbide, Chemical, Pasteicide, Sawdust, Sawdust, Sand, Rhodamine, Khesari, Favicol

प्रस्तावना

मनुष्य के दैनिक जीवन में उपयोग में लाई जाने वाली वस्तुओं का आज के युग में शुद्ध–रूप में मिलना कठिन है। यदि बाजार में खाने–पीने की वस्तुएँ खरीदने जाते हैं, तो काफी जांच पड़ताल के बाद ही खरीदा जाता है।

आज मिलावट की समस्या इस प्रकार से व्यापक बन गई है कि खाने–पीने की वस्तुओं की शुद्धता के विषय में हम लोगों के मन में अविश्वास

और सन्देह की जड़ बहुत गहरी हो गई है, यह सत्य भी है। आजकल शुद्ध रूप में कोई वस्तु प्राप्त करना आसान नही है। पहले ग्रामीण क्षेत्रों में शुद्ध–रूप में मिल जाता था लेकिन आज तो वह भी दूभर हो गया है। शहरी क्षेत्रों से यह मिलावट रूपी बीमारी अब गाँव में भी फैल गई है। 21वीं सदी में शहरी, ग्रामीण, अशिक्षित, शिक्षित के द्वारा बेची जाने वाली वस्तुओं में अपने तरीके से मिलावट करते हैं। इस प्रकार से मिलावट एक सामान्य बात हो गई है। घी, अनाज, आटा, मसाले, दूध, दवाईयां, बच्चों के द्वारा खाए जाने वाली चीजें आदि बहुत सी वस्तुएं मार्केट में शुद्ध रूप में नही मिलती है। अपमिश्रण या अपद्रव्यीकरण के उदाहरण हमें अनेकों देखने को मिलते हैं जैसे दूध में पानी, अनाजों में मिलावट, पिसी हुई हल्दी में पीली मिट्टी, काली मिर्च में पपीते के बीज, छुआरे की गुठलियों में सुपारी मिलाई जाती है। दूध में अरारोट या सपरेटा का पाउडर, गंदा पानी, मावे में उबले हुए आलू या शक्करकनद या सपरेटा का खोया, आदि अपद्रव्यीकरण के उदाहरण देखने को मिलते हैं। बीड़ी, सिगरेट में रखी जाने वाली तम्बाकू में गधे, घोड़े की लीद भी मिलाई जाती है। पर यह कहावत भी कही जाती है कि आजकल तो जहर भी शुद्ध नहीं मिलता हैं।

अध्ययन का उद्देश्य

प्रस्तुत शोधपत्र का उद्देश्य मिलावट की समस्या पर केन्द्रित है। प्रस्तुत शोध में विशेषकर खाद्य पदार्थों में जो मिलावट की जाती है और उन खाद्य पदार्थों के हमारे शरीर पर पड़ने वाले प्रभावों का वर्णन करना ही प्रमुख उद्देश्य है :

1. खाद्य पदार्थों में मिलावट से होने वाले हमारे शरीर पर प्रभाव का अध्ययन करना।
2. मिलावटी खाद्य पदार्थ का प्रयोग करने से हमारे शरीर को अनेक जानलेवा बीमारियों का सामना करना पड़ता है और कई बार इंसान का जान कसे हाथ धोना पड़ता है।
3. मिलावट करने वाले तो रक्षक के रूप में भक्षक बने हुये है। यह दर्शाना भी प्रमुख उद्देश्य है।

साहित्यावलोकन

वर्तमान शोध कार्य को शुरू करने से पूर्व शोधार्थी ने उपलब्ध साहित्य की समीक्षा की जो कि प्रस्ततु शोध कार्य के शीर्षक के आस–पास भी हैं जिसकी समीक्षा इस प्रकार है।

राम गोपाल शर्मा 'दिनेश' जी ने ''माधव लौटा अपने गाँव'' उपन्यास में मिलावट को उजागर किया है कि 'किस तरह दूध में पानी और घी में घासलेट मिलाकर बेचा जाता है।

माधव बाबा की बात ध्यान से सुन रहा था। बोला यह तो सही है कि हम यदि दूध–दही बच्चों को खिलाएँ, तो हमारे मुल्क की आधी से ज्यादा आबादी खुशहाल हो सकती है। शहर वाले भी सही रास्ते पर आ सकते हैं। अभी तक तो वे यह समझती है कि पैसा ही दूध–दहीं है, जिसे वे बिना मेहनत के भी पा सकते हैं पर जब पैसे से उन्हें दूध–दहीं और घी न मिल सके तो वे भी मेहनत करना सीखें और जानवरों का आदर करें। फिर वे दूध–दही और घी की कीमत पहचान सकते हैं। दूध में पानी और घी में घासलेट बेचने का पाप फिर अपने आप धट जाए।''[1]

राम गोपाल शर्मा 'दिनेश' ने उपन्यास के माध्यम से कहते हैं कि ''हम रोटी में जहर मिलाकर बेचना चाहते हें और कहते हैं हिंसा चल नहीं सकती।''[2]

प्राक्कथन

मिलावट की समस्या से सम्बन्धित शोध कार्य को प्रारम्भ करने से पूर्व शोधार्थी मन में अनेक प्राक्कथनों ने जन्म लिया है जो इस प्रकार है।

1. वर्तमान में क्या मिलावट–खोरी पर सरकार का ध्यान नही है जो यह मिलावट खत्म नहीं हो रही हैं।
2. मिलावट के धंधे को जड़ से खत्म करने के लिए कोई सख्त कानून नहीं बने।
3. क्या सरकार इसको खत्म करने के लिए कोई सख्त कानून नहीं बना सकती।
4. शोधार्थी के मन में यह भी सवाल आया कि मिलावट करने वालों को कानून या फिर नैतिकता या कर्त्तव्यों का कोई ख्याल नहीं है।
5. 21वी सदी में मिलावट के कारण अनेक नई–नई बीमारियों का नाम सुनने कम होंगे।
6. मिलावट से या अपमिश्रण से मरने वालों की संख्या में कमी होगी।
7. सरकार को मिलावट को रोकने के लिए सख्त कानून के साथ–साथ, समय–समय पर मिलावट करने वाले के लिए बने कानून में बदलाव करना चाहिए।
8. दूसरों की सेहत के साथ खिलवाड़ करने वालों को फांसी की सजा होनी चाहिए।
9. मिलावट रोकने के लिए अधिनियम 1954 और प्रिवेंशन ऑफ एडल्टेशन एक्ट 1955 में जो बनाया गया, क्या उसका पालन किया जा रहा हे।
10. खाद्य पदार्थों की मिलावट में विराम लग सकता है।

खाने–पीने की वस्तुओं में मिलावट से हमारी जिन्दगी दाँव पर लगी है। चारों और लोग मिलावट से परेशान हैं। दूध, फल, दालों आदि के माध्यम से जहर हमारे शरीर में पहुँच रहा है। दूध व मिठाईयों के माध्यम से मीठा जहर हमारे द्वारा खाया जा रहा हे। पेय पदार्थों में भी मिलावट कम नहीं है। आज हम बेमौसमी सब्जियाँ खा रहे हैं। यह एक सत्य कथन है कि बेमौसमी सब्जियाँ, फल खाने की ललक ने रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों के उपयेाग को बेहद बढ़ावा मिल रहा है। आज दूध, दहीं से बनी मिठाईयों में मिलावट है। फलों में केला, पपीता जैसे फलों को कैल्शियम, कार्बाइड की सहायता से पकाया जाता है। बड़े–बड़े शहरों में पुरानी मछलियें को बर्फ में रखने के साथ–साथ इन मछलियों को ताजा रखने के लिए पेस्टिसाइड्स छिड़के जाते हैं। मछलियों को दुकानदार के द्वारा जिन्दा मछलियों को गन्दे पानी से भरे होद में रखकर जिन्दा मछलियों का वनज बढ़ाने के लिए प्रतिबंधित दवाईयों का इस्तेमाल किया जाता है। यह मछलियों का वजन बढ़ाने के लिए प्रतिबंधित दवाईयों का इस्तेमाल किया जाता है। यह मंनुष्यों की सेहत के लिए नुकसानदायक हैं और इंसान जब इन्हें खाते हैं तो उनके शरीर में अनेक बीमारियों को जन्म देती हैं।

मिलावट या अपमिश्रण की मात्रा दस से बारह वर्षों में लगभग 28–38 प्रतिशत से लेकर लगभग 30 से 80 प्रतिशत से भी अधिक मिलावट होती है। समाज का मानसिक, शारीरिक विकास क्या होगा, मिलावट को देखकर ही अनुमान लगाया जा सकता है। यदि मनुष्य का शरीर रोगी होगा तो उसकी प्रगति के द्वारा भी इससे प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकते हैं। बार–बार मिलावट की वस्तुएँ खाने से शरीर में अनेक रोग पैदा हो जाते हैं और लाख कोशिश करने पर भी इस अमूल्य जीवन को नहीं बचा पाते। वर्तमान में बीमारियों का मुख्य कारण तो मिलावट ही माना जाता है।

वस्तुओं में मिलावट

आटा, दाल, मसाले, फल, सब्जियों, मिर्च पावडर, नकली चावल, दूध, शहद, पनीर आदि में मिलावट करके मनुष्य के अमूल्य जीवन के साथ खिलवाड़ किया जाता है। मिर्च पावडर में लाल रंग, भूसा, ईंट का चूरा, बालू, रोडामाइन मिलाया जाता है। आटे में चाक पावडर, रेत, अन्य आटा, मैदा मिलाया जाता है। फल, सब्जियों की रातो–रात पकाने या आकर बढ़ाने के लिए रासायनिक इन्जैक्शन तथा फलों को पकाने, मिठास, बढ़िया रंग, आकार के लिए इंजैक्शन कार्बाइड के अन्य रसायन का प्रयोग किया जाता है। दूध में प्लास्टिक सोडा की मिलावट की जाती है। दालों में मिलावट के लिए खेसारी दाल, कंकड़ और रंग का प्रयोग किया जाता है। आजकल नकली चावल भी बाजार में आ गए है। यह चावल प्लास्टिक और आलू के बने होते हैं।

मिलावट के शरीर पर प्रभाव

मिलावटी वस्तुएं खाने से शूगर, तासीन सम्बंधी समस्याएँ पैदा होती हैं। मिलावटी दूध पीने से पाचन तन्त्र, लीवर, जोड़ों व गुर्दों की बीमारियाँ, किडनी फेल आदि रोग हो जाते हैं। मिलावटी आटा खाने से मोटापा पाचन तंत्र के लिए खतरनाक, आंतों सम्बंधी बीमारी हो जाती है। नकली चावल खाने से पेट सम्बंधी बीमारियाँ हो जाती है।

निष्कर्ष

अंत में निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि मिलावट करने वाले तो एक हत्यारे से भी खतरनाक हैं। मिलावट करने वालों को फाँसी की सजा होनी चाहिए। मिलावट करने वाला व्यक्ति मिलावट से धन तो कमा लेता है अपनी आत्म संतुष्टि के लिए, लेकिन वह यह नहीं जानता कि वह कितना बड़ा पाप कर रहा है। मनुष्य के प्रति उसके क्या कर्त्तव्य है। लेकिन निर्मल रानी इस सम्बंध में लिखती हैं कि ''एक हत्यारा भी खाद्य पदार्थों में मिलावट करने वालों में अधिक ईमानदार है वह पाप के प्रति सच्चा है।''

अन्त में यही कहा जा सकता है कि मिलावट करने वालों के लिए कड़ी से कड़ी सजा या फाँसी देनी चाहिए। शायद भय से मिलावट का खत्म किया जा सकता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. *राम गोपाल शर्मा 'दिनेश', ''माधव लौटा अपने गांव'', पृ0 19*
2. *राम गोपाल शर्मा 'दिनेश', ''माधव लौटा अपने गांव'', पृ0 20*
3. *www.mehtvta.com*
4. *bharatseasthya.net*
5. *www.hindigatha.com*
6. *www.essatsinhindi.com*